Research Paper | Humanities | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 6 | Issue : 3 | March 2020



PATHYAPUSTAK GRAPHIC DESIGN KI KAHANI – SAMAGRI VISHLESHAN

पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाईन की कहानी –सामग्री विश्लेषण

राजेश कुमार निमेश

सह–आचार्य, सी आई ई टी, एन सी ई आर टी, दिल्ली

ABSTRACT

यह शोध पत्र कक्षा ग्यारहवीं की ललित कला की पाठ्यपुस्तक ''ग्राफिक डिजाईन की कहानी'' पर आधारित है। पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन हेतु पाठ्यपुस्तक में दिए तीन खण्डों में आठ अध्यायों को आधार बनाकर प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। इस प्रश्नावली का उपयोग करते हुए सामग्री विश्लेषण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों की प्रतिकियाएं निर्मित प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त की गई जिसके आधार पर पुस्तकों का विश्लेषण किया गया और अध्ययन में पाया गया कि पाठ्यपुस्तक सभी मानक बिदुओं जैसेः (पुस्तक की अशुद्धियां, उद्देश्यों का क्रमानुसार उल्लेख, पाठ्यक्रम नीति, पाठ्यचर्या में उल्लिखित विषयवस्तु का सम्मिलित करना, सीखने की समझ पैदा करना, भीर्शक और उपशीर्षक पाठ्यसामग्री का समर्थन, अनुच्छेद या अनुभाग की अध्याय में चर्चा, मुख्य विचार और तथ्य स्पष्ट रुप से व्यक्त करना, सिखाने वाली गतिविधियों को दर्शाना, मुख्य विचारों पर ध्यान केंद्रित करना, वर्गीकृत शब्दावली में शब्दों का प्रयोग, अपरिचित एवम् विशेष शब्दों को अच्छी तरह परिभाषित करना, पुस्तकों की सूची और संदर्भो का प्रयोग, मदों के चयन और श्रेणीकरण कार्य पर एक स्पष्ट प्रणाली को अपनाना, पाठ्यपुस्तक में व्यापक शैक्षिक चिंताओं के साथ सामंजस्य रखना, और भविष्य में स्थानीय परिस्थितियों के द्वारा आवश्यक सामग्री का उपयोग एवम् संशोधित करना) पर पूर्णरुप से खरी नहीं उतरती, फिर भी कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सक्षम है। इसमें कोई दो राय नहीं कि समय के साथ–साथ पाठ्यपुस्तकों में सुधारों की आवश्यकता उत्पन्न होती रहती है और साथ–साथ इन समस्याओं का निदान भी।

मुख्यशब्दः पाठ्यक्रम नीति, विषयवस्तु, उपशीर्षक पाठ्यसामग्री, पूर्वाग्रहों, इंडो–इस्लामिक, रॉक पेंटिंग

परिचयः

विश्लेषण परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य एक पाठ्यपुस्तक की ताकत और कमजोरियों की पहचान करना है, और "नकारात्मक" लक्षणों (त्रुटियों, विकृतियों, पूर्वाग्रहों, आघात आदि) को खत्म करना है। इसलिए समय–समय पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन एक आवश्यक प्रक्रिया है, जिनका चर्चा राष्टीय पाठ्यचर्या 2005, में भी किया गया है। पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार, हर स्तर पर विषय के रूप में कला को जगह दिए जाने की सिफारिश की गई है जिसमें गायन, नृत्य, दृश्य कलाएँ और नाटक चारों पहलू शामिल हैं। पर यहाँ भी ज़ोर परस्पर–क्रियात्मक पद्धतियों पर होना चाहिए न कि प्रशिक्षण पर। इस प्रकार शिक्षकों को प्रभाववादी आकलन से आगे बढ़ने में मदद करता है, और यह उन्हें पाठ्यपुस्तक सामग्री की समग्र प्रकृति में उपयोगी, सटीक, व्यवस्थित और प्रासंगिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने में मदद करता है।यही कारण है कि पाठ्यपुस्तक विश्लेषण को शैक्षिक प्रणालियों के सुधार और विकास का एक अभिन्न अंग बनना चाहिए, साथ ही इस क्षेत्र में किए गए अनुसंधान का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समय के साथ स्कूल की पाठ्यपुस्तकें सिर्फ एक शिक्षण उपकरण न होकर यह शोध का एक स्रोत भी है। इस अध्ययन में कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्यपुस्तक पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाईन की कहानी जो कि ललितकला पर आधारित है, जो कि राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित की गई है, को मूल्यांकन के लिए चुना गया। इस पुस्तक में तीन इकाईयाँ हैं जिनमें 8 अध्याय हैं, प्रथम इकाईः ग्राफ़िक डिज़ाइन के मूल आधार, इसमें तीन अध्याय हैं, जैसेः अध्याय–1: ग्राफ़िक डिज़ाइन परिचय, अध्याय–2: ग्राफ़िक कला डिज़ाइन और ग्राफ़िक डिज़ाइन, अध्याय–3: ग्राफ़िक के तत्व और सिद्धांत डिज़ाइन। द्वितीय इकाईः ग्राफ़िक डिज़ाइन और समाज, इसमें दो अध्याय हैं, जैसेः अध्याय–4: स्वदेशी ग्राफ़ि क डिज़ाइन और संस्कृति, अध्याय–5: ग्राफ़िक डिजाइन की स्वदेशी परंपराएँ। तृतीय इकाईः ग्राफिकीय संचार की तकनीक, इसमें तीन अध्याय है, जैसेः अध्याय–6: लिपि का विकास, अध्याय–7: प्रति लिपिमुद्रण के विकास की अवस्थाएँ, और अध्याय–8: धातु की चल टाइप से डिज़िटल इमेजिंग तक, आदि को प्रश्नावली निर्माण का आधार बनाया गया और मूल्यांकन में विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को कथन के रुप में उपयोग किया गया है, जो कि कला शिक्षण सामग्री के उद्देश्य को सौंदर्यात्मक और वैयक्तिक चेतना को प्रोत्साहित करने में विविध रूपों में व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ावा देगी है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अनुसंधान के अंर्तगत उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण मेंएनसीईआरटी/सीबीएसई/निजी प्रकाशकों द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला के लिए प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों से संबंधित अध्ययन।

अध्ययन की सीमा

यह शोध शीर्षक ''उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण में पाठ्यपुस्तक भारतीय कला का परिचय–सामग्री विश्लेषण पर आधारित है। यह शोध अध्ययन केवल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली क्षेत्र में स्थित विद्यालयों पर ही सीमित है। अध्ययन में दिल्ली सरकार के विद्यालयों, दिल्ली सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालयों, और दिल्ली निजी विद्यालयों के अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन के अंर्तगत पाठ्यपुस्तक विश्लेषण मापनी के लिए यादृच्छिकी न्यादर्शन तकनीक द्वारा (03) सरकारी विद्यालयों, (03) सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, और (03) निजी विद्यालयों के अध्यापकों को पाठ्यपुस्तक विश्लेषण मापनी विरित की गई। प्रत्येक प्रत्यर्थी को (01) पाठ्यपुस्तक विषयवस्तु विश्लेषण मापनी वितरित की गई। जिसमें सभी 09 अध्यापकों से पूर्ण 9 मापनियाँ प्राप्त हुई, जो कि वितरित मापनियों का शत्–प्रतिशत रहा।

अध्ययन के अंर्तगत निम्नलिखित कथनों पर शिक्षकों के मत प्राप्त हुएः

कथन 1. पुस्तक को प्राथमिकता देते हुए अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया गया है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पुस्तक को प्राथमिकता देते हुए अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया गया है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। अर्थात असहमत कोई भी नहीं पाया गया।

कथन 2. पाठ्यपुस्तक में उद्देश्यों का क्रमानुसार उल्लेखन किया गया है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक में उद्देश्यों का क्रमानुसार उल्लेखन किया गया हैके प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए। अर्थात 22 प्रतिशत अध्यापक ही असहमत पाए गए।

कथन 3. पाठ्यक्रम नीति भारत के आशय और उद्देश्यों से मेल खाती है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 1(11.11%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यक्रम नीति भारत के आशय और उद्देश्यों से मेल खाती है,के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए। अर्थात 22 प्रतिशत अध्यापक ही असहमत पाए गए।

कथन 4. पाठ्यचर्या में उल्लिखित विषयवस्तु को पाठ्यपुस्तक में पूर्ण रुप से सम्मिलित किया गया है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यचर्या में उल्लिखित विषयवस्तु को पाठ्यपुस्तक में पूर्ण रुप से सम्मिलित किया गया है के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधितर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। अर्थात कोई भी अध्यापक ही असहमत या दृढ़तापूर्वक असहमत नहीं पाया गया।

कथन 5. सामग्री को पाठ्य के क्रम में प्रस्तुत किया है जो स्पश्टता प्रदान करते हुए सीखने की समझ पैदा करता है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः सामग्री को पाठ्य के क्रम में प्रस्तुत किया है जो स्पष्टता प्रदान करते हुए सीखने की समझ पैदा करता है, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 6. लेखन वर्णनात्मक और विचार–उत्साहित करने वाला है, जो विभिन्न स्तर पर पाठकों की कल्पना की व्याख्या के लिए दृश्यता को बढ़ावा देता है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः लेखन वर्णनात्मक और विचार–उत्साहित करने वाला है, जो विभिन्न स्तर पर पाठकों की कल्पना की व्याख्या के लिए दृश्यता को बढ़ावा देता है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधितर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 7. भीर्शक और उपशीर्षक पाठ्यसामग्री का समर्थन करते हैं और अध्याय में आगे आने वाली विषयवस्तु के लिए सूचक होते है जिससे पाठक को इस अनुभाग के बारे में एक स्पष्ट जानकारी मिलती है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 7(77.78%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः शशीर्षक और उपशीर्षक पाठ्यसामग्री का समर्थन करते हैं और अध्याय में आगे आने वाली विषयवस्तु के लिए सूचक होते है जिससे पाठक को इस अनुभाग के बारे में एक स्पष्ट जानकारी मिलती है के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 8. अनुच्छेद या अनुभाग की अध्याय में चर्चा की गई है जिसमें पाठक को स्थापित, उदूरन और मुख्य विचारों को अवशोषित करने की जानकारी दी गई है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के

अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः अनुच्छेद या अनुभाग की अध्याय में चर्चा की गई है जिसमें पाठक को स्थापित, उदूरन और मुख्य विचारों को अवशोषित करने की जानकारी दी गई है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधितर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 9. प्रत्येक अध्याय में दिए हुए मुख्य विचार और तथ्य स्पष्ट रुप से व्यक्त किए गए है,
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः प्रत्येक अध्याय में दिए हुए मुख्य विचार और तथ्य स्पष्ट रुप से व्यक्त किए गए है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधितर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 10. सिखाने वाली गतिविधियों में पर्याप्त कार्यक्रम दर्शाए गए है, जो पाठकों को दिशा दे सकें तथा क्रिया कलापों पर ध्यान केंद्रित हो सकें।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः सिखाने वाली गतिविधियों में पर्याप्त कार्यक्रम दर्शाए गए है, जो पाठकों को दिशा दे सकें तथा क्रिया कलापों पर ध्यान केंद्रित हो सकें, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 11. प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए बहु स्तर के प्रश्न पाठकों को पुनः मुख्य विचारों पर ध्यान केंद्रित करने और उनकी व्याख्या करने में सहायक होते है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 7(77.78%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए बहु स्तर के प्रश्न पाठकों को पुनः मुख्य विचारों पर ध्यान केंद्रित करने और उनकी व्याख्या करने में सहायक होते है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 12. पाठ्यक्रम की मुख्य संरचना को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में परिवर्तन किए गए हैं
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा सहमत, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यक्रम की मुख्य संरचना को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में परिवर्तन किए गए हैं, के प्रति सरकारी, और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 13. वर्गीकृत शब्दावली में शब्दों का प्रयोग, अपरिचित एवम् विशेष शब्दों को अच्छी तरह परिभाषित किया गया है,
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा सहमत, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः वर्गीकृत शब्दावली में शब्दों का प्रयोग, अपरिचित एवम् विशेष शब्दों को अच्छी तरह परिभाषित किया गया है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 14. पाठ्यपुस्तक संबंधित पुस्तकों की सूची और संदर्भों का प्रयोग किया गया है,
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित, तथा सहमत, 3(33.33%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक संबंधित पुस्तकों की सूची और संदर्भों का प्रयोग किया गया है, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक असहमत पाए गए।

कथन 15. अधिक जानकारी के लिए पाठ्को को पाठ्कपुस्तक से संबंधित संदर्भ दिए गए है,
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित, तथा सहमत, 4(44.45%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः अधिक जानकारी के लिए पाठ्को को पाठ्कपुस्तक से संबंधित संदर्भ दिए गए है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक असहमत पाए गए। तथा निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 16. विद्यार्थियों को सीखने के लिए सभी प्रामाणिक प्रदर्शन की जानकारी दी गईं है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 5(55.56%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विद्यार्थियों को सीखने के लिए सभी प्रामाणिक प्रदर्शन की जानकारी दी गईं है, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक असहमत पाए गए। निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 17. यह पाठ्यपुस्तक लिंग, जाति, धर्म, वर्ग, व अन्य पूर्वाग्रहों से मुक्त है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः यह पाठ्यपुस्तक लिंग, जाति, धर्म, वर्ग, व अन्य पूर्वाग्रहों से मुक्त है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 18. प्रत्येक इकाईयों और अभ्यास विषय, स्थिति, विषय, कौशल विकास के स्वरुप या व्याकरणिक के संबंध में जुड़े हुए हैं।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.45%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 3(33.33%) असहमत तथा अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः प्रत्येक इकाईयों और अभ्यास विषय, स्थिति, विषय, कौशल विकास के स्वरुप या व्याकरणिक के संबंध में जुड़े हुए हैं, के प्रति सरकारी विद्यालयो के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक असहमत पाए गए।

कथन 19. नई भाषाई वस्तुओं का परिचय, अभ्यास, और पुनरावृति छात्रों के लिए पर्याप्त प्रतीत होती।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित, तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः नई भाषाई वस्तुओं का परिचय, अभ्यास, और पुनरावृति छात्रों के लिए पर्याप्त प्रतीत होती है, के प्रति सरकारी, और सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 20. इन मदों के चयन और श्रेणीकरण कार्य पर एक स्पष्ट प्रणाली अपनाई गई है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः इन मदों के चयन और श्रेणीकरण कार्य पर एक स्पष्ट प्रणाली अपनाई गई है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 21. भाषाई सूची विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए अध्यापकों के उद्देश्यों के लिए उपयुक्त है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) सहमत, 3(33.3%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः भाषाई सूची विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए अध्यापकों के उद्देश्यों के लिए उपयुक्त है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 22. सामग्री पर्याप्त एवम्रुचिपूर्ण तैयार कि गई है ताकि विद्याथियों द्वारा ध्यान केन्द्रित किया जा सके।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.45%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 3(33.33%) असहमत तथा अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः सामग्री पर्याप्त एवम् रुचिपूर्ण तैयार कि गई है ताकि विद्याथियों द्वारा ध्यान केन्द्रित किया जा सके, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापक असहमत पाए गए।

कथन 23. यह पाठयपुस्तक उचचतर माध्यमिक सतर के लिए प्रासांगिक है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत, 2(22.22%) असहमत तथा अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः यह पाठयपुस्तक उचचतर माध्यमिक स्तर के लिए प्रासांगिक है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अणिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत और निजी विद्यालयों के अध्यापक असहमत पाए गए।

कथन 24. यह पुस्तक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण के लिए पूर्णरुप से सहयोगी है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा सहमत, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः यह पुस्तक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण के लिए पूर्णरुप से सहयोगी है, के प्रति सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत, और वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 25. प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए बहु स्तर के प्रश्न पाठकों को पुनः मुख्य विचारों पर ध्यान केंद्रित करने और उनकी व्याख्या करने में सहायक होते है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत तथा, अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विद्यार्थी अपनी आशाओं को पाठ्यसामग्री, कार्यप्रणाली, और प्रारुप के द्वारा सफलतापूर्वक व्यवस्थित कर सकते हैं, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत, पाए गए और सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 26. पाठ्यपुस्तक में व्यापक शैक्षिक चिंताओं (जैसे प्रकृति और सीखने की कौशल, अवधारणा की भूमिका) के साथ सामंजस्य रखा गया है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.44%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 5(55.56%) सहमत, तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक में व्यापक शैक्षिक चिंताओं (जैसे प्रकृति और सीखने की कौशल, अवधारणा की भूमिका) के साथ सामंजस्य रखा गया है,के प्रति सरकारी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापकों के मत सहमत,

कथन 27. पुस्तक सामग्री संवादात्मक है, शिक्षार्थियों के लिए अपने ललित कला का उपयोग करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती हैं।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 7(77.78%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पुस्तक सामग्री संवादात्मक है, शिक्षार्थियों के लिए अपने ललित कला का उपयोग करने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती हैं, के प्रति सरकारी, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए और सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

कथन 28. भविष्य में स्थानीय परिस्थितियों के द्वारा आवश्यक सामग्री का उपयोग एवम् संशोधित किया जा सकता है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 1(11.11%) सहमत 2(22.22%) अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः भविष्य में स्थानीय परिस्थितियों के द्वारा आवश्यक सामग्री का उपयोग एवम् संशोधित किया जा सकता है, के प्रति सरकारी, और सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत,पाए गए तथा निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 29. शिक्षकों के लिए दी गईं टिपणियाँ स्पष्ट और उपयोगी हैं।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा सहमत, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः शिक्षकों के लिए दी गईं टिपणियाँ स्पष्ट और उपयोगी हैं, के प्रति सरकारी, और निजी विद्यालयों के अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापक अनिश्चित पाए गए।

कथन 30. यह पुस्तक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण के लिए पूर्णरुप से सहयोगी है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.45%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः यह पुस्तक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षण के लिए पूर्णरुप से सहयोगी है, के प्रति सरकारी, और निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक सहमत पाए गए।

तालिका में दिए गए सभी 30 कथनो के समक्ष सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों के योग को देखा जाए तो 75(83.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 15(16.67%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत, दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के मतों में से 33(36.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 39(43.33%) सहमत, 9(10.00%) अनिश्चित, 9(10.00%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।
निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों में से 14(15.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 38(42.22%) सहमत, 29(32.22%) अनिश्चित, 9(10.00%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

तालिका में दिए गए सभी 30 कथनो के समक्ष सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 122(45.18%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 92(34.07%) सहमत, 38(14.07%) अनिश्चित, 18(6.66%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः
इस अध्ययन में पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाईन की कहानी के मूल्यांकन का उद्‌देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सामग्री की गुणवत्ता, सार्थकता, वैद्यता, और उपयोगिता आदि अनेक बिन्दुओं की जाँच करना था जिसमें पाया गया कि कथनों के प्रति अध्यापकों से साकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के मत प्राप्त हुए, जिसमें कुछ अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत और सहमत पाए गए। वहीं कुछ अध्यापक असहमत और अनिश्चित भी पाए गए, अर्थात प्राप्त आकड़ो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक सामग्री पूर्णरुप से अध्यापकों की अपेक्षा के अनुरुप नहीं है। इसलिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि पाठ्य पुस्तकें अध्यापक और विद्यार्थियों के पास पहुंचे तो शतप्रतिशत गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए, जिसमें चाहे पाठ्यक्रम नीति हो, पुस्तक का

लेखन वर्णन हो, शीर्शक और उपशीर्षक पाठ्यसामग्रीहो, पुस्तक में सिखाने वाली गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम हों,वर्गीकृत शब्दावली, अपरिचित एवम् विशेष शब्दों या उनकों परिभाषित करना हो, पाठ्कपुस्तक से संबंधित संदर्भ हो,सामग्री का उपयोग एवम् संशोधित हो, शिक्षकों से संबंधित टिपणियाँ हो, सामग्री पर्याप्त एवम् रुचिपूर्ण हो, और पाठयपुस्तक उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए प्रासांगिक है या नहीं आदि सभी बिन्दुओं पर विषेश ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में पाठ्यपुस्तक लिखते समय महत्वपूर्ण बिन्दुओं को समाहित किया जा सके।

संदर्भः

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005
2. सारा कॉस्मैनेजहेदफार्ड , मसोमेह पौरराजब , मोहतरम रब्बानी (2015). इफेक्टिव ऑफ पिक्चरस इन टेक्सटबुक्स ऑन स्टूडेंट्स क्रिएटिविटी, मल्टी–डिसप्लीनरी एड्यु ग्लोबल क्वेस्ट (क्वार्टरली). वॉल .4(14)
3. ब्लैकी , फिओन (1991). फिलोसोफिकल बेसेस फॉर कन्सेप्शन्स ऑफ सीनियर सेकेंडरी लेवल स्टूडेंट इवैल्यूएशन इन आर्ट एजुकेशन इन ब्रिटैन एंड नार्थ अमेरिका . मैरीलीन जुरमुहलिन वर्किंग पेपर्स इन आर्ट एजुकेशन. वॉल .10 पृ0 सं0 96–102
4. खालिद महमूद (2009), इंडीकेटर्स फॉर ए क्वालिटी टेक्स्टबुक इवैल्यूएशन प्रोसेस इन पाकिस्तान , जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रेफ्लेक्शंस इन एजुकेशन. वॉल .3(2) पृ0 सं0 158–176
5. https://www.scribd.com/document/326132671/The-Need-of-Textbook-Evaluation
6. अमेरियन, एम, और खैवार, ए(2014), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लैंग्वेज लर्निंग एंड एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स वर्ल्ड, (प्श्रस्स्।ॅ), वॉल 6(1), पृ0 सं0 523–533, ूपरससंसू. वतहद्ध
7. https://www.researchgate.net/publication/320172366_Textbook_Selection_Evaluation_and_Adaptation_Procedures½-